IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में वर्तमान पर्यावरणीय मुद्दे व चुनौतियों का परिदृश्य

श्री राहुल कुमार[1], डॉ0 संगीता रानी[2], श्री संजीव कुमार[3]
व्याख्याता[1] , सहायक आचार्या[2] , सहायक आचार्य[3]

शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तरप्रदेश

सारांश

भारत में पर्यावरणीय मुद्दे हानिकारक होते जा रहे हैं जो मानव स्वास्थ्य के लिए चिंता के साथ-साथ एक चुनौती है। वर्तमान पर्यावरणीय मुद्दों में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, पर्यावरणीय क्षरण, प्लास्टिक प्रदूषण और संसाधनों की कमी प्रमुख कारण हैं। पर्यावरण की समस्या वातावरण को प्रभावित करती है जिसका सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर देखने को मिलता है।। अपशिष्ट पदार्थ को कूड़ेदान में फेंकना आसान होता है। जितने अधिक लोग पृथ्वी पर हैं, उतना ही वे कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसों को हवा में छोड़ते हैं। जैव विविधता, या दुनिया में जीवन की विविधता या किसी विशेष पारिस्थितिकी तंत्र में गिरावट आ रही है। जैव विविधता का स्तर काफी कम हो गया है। पीने योग्य पानी वायुजनित रोगों, विषाक्त पदार्थों और खतरनाक रसायनों जैसी चीजों से दूषित हो रहे है। अनुमानित 810 मिलियन लोगों के पास पीने के लिये स्वच्छ पानी नहीं है। स्वच्छ भारत अभियान 2014 से 2021 की अवधि मे भारत में एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू हुआ। इस स्वच्छता अभियान मे विश्वविद्यालय तथा कालेज स्तर पर सभी की भागीदारी सुनिश्चित की गई। भारत सरकार द्वारा इस कार्यक्रम के माध्यम से सभी को जागरूक किया गया। पर्यावरण के मुद्दों के लिए राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम, 2010 (एनजीटी) भारत की संसद का एक अधिनियम है जो संबंधित मामलों के शीघ्र निपटान को संभालने के लिए एक विशेष न्यायाधिकरण के निर्माण को सक्षम बनाता है। पर्यावरण कानूनों और विनियमों का प्रभावी प्रवर्तन बहुत महत्वपूर्ण है। जिससे हम पर्यावरण के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझे और आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित भविष्य प्रदान कर सके।

मुख्य शब्द: स्वच्छ भारत अभियान, जल प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण, वनों की कटाई, जैव विविधता,राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) आदि।

परिचय

पर्यावरणीय मुद्दे मानव स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण और मनुष्यों दोनों के लाभ के लिए व्यक्तिगत या सरकारी स्तरों पर प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने की एक व्यवस्था है। पर्यावरणवाद, एक सामाजिक और पर्यावरण आंदोलन, शिक्षा और सक्रियता के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करता है। पर्यावरण और वातावरण से संबंधित समस्या एक गंभीर मुद्दा है यदि हम इसके प्रति सचेत नहीं होते हैं तो आने वाली पीढ़ी के लिए यह खतरनाक विषय है। हमें विचार करना होगा कि हम किस प्रकार अपने चारों ओर के वातावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रख सकते हैं। भारत में वातावरण से संबंधित जो समस्या उभरी है इसका कारण मनुष्य ही है अतः हमें स्वच्छ वातावरण के लिए जागरूक होना होगा।

वर्तमान परिदृश्य में मुद्दे व चुनौतियां

प्रमुख वर्तमान पर्यावरणीय मुद्दों में प्लास्टिक प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, पर्यावरण क्षरण, और संसाधनों की कमी आदि शामिल हैं। भविष्य में भारत के लिए पर्यावरण से संबंधित यह महत्वपूर्ण मुद्दे व चुनौतियां हैं। हालांकि भारत में सरकारी व गैर सरकारी संगठन इन मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं और स्वच्छ वातावरण के लिए शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों पर लोगों को जागरुक कर रहे हैं। जैसे संरक्षण आंदोलन पारिस्थितिक रूप से मूल्यवान प्राकृतिक क्षेत्रों, आनुवंशिक रूप से संशोधित खाद्य पदार्थों और ग्लोबल वार्मिंग के संरक्षण के लिए प्रयास कर रहा है। **प्लास्टिक प्रदूषण** भी एक बड़ी समस्या है। भारत सरकार के आंकड़ों से स्पष्ट है कि पर्यावरण के लिए प्लास्टिक प्रदूषण चिंता का विषय है।

इस मुद्दे पर हमें राष्ट्रीय स्तर,विश्वविद्यालय,तथा कॉलेज स्तर पर विचार करने की आवश्यकता है कि इसका प्रयोग वातावरण के लिए बहुत ही खतरनाक और विनाशकारी है। हमें इस मुद्दे पर लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। भारत में कुछ अन्य पर्यावरणीय चुनौतियों इस प्रकार है ।

लोक जन स्वास्थ्य

लोक जन स्वास्थ्य में हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रदूषण, पानी की कमी, और अधिक जनसंख्या सभी के स्वास्थ्य के लिए एक खतरा हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, हर साल हर चार में से एक मौत सीधे तौर पर प्रदूषित वातावरण के कारण होती है। विकसित देशों में भी, बढ़ते टीकाकरण विरोधी आंदोलन से लोक जन स्वास्थ्य को खतरा है, जिससे खसरा जैसी बीमारियों में पुनरुत्थान हो रहा है जो लगभग पूरी तरह से समाप्त हो गए थे। मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए अच्छा वातावरण व पर्यावरण महत्वपूर्ण मुद्दा है। । लोग क्या खाते हैं, क्या पीते हैं और कैसे वातावरण मे सांस लेते हैं, यह उनके स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में **प्रदूषित हवा व प्रदूषित जल** एक बड़ी समस्या है। इन्हीं समस्याओं के कारण हर वर्ष लोग गंभीर बीमारी से ग्रसित होते हैं। सरकारी आंकड़ों से स्पष्ट है कि भारत में सबसे ज्यादा मृत्यु प्रदूषित जल और प्रदूषित हवा के कारण होती हैं। इस पर हमें विचार करना होगा तथा शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में इस मुद्दे पर लोगों को जागरूक करते हुए इन सभी समस्याओं से हमें निपटने की आवश्यकता है।

अपशिष्ट निस्तारण

यदि हम अपशिष्ट पदार्थ या कचरे को उनके निश्चित स्थान पर नहीं डालते हैं। जिसके कारण वातावरण दूषित होता है। अपशिष्ट पदार्थ को कूड़ेदान में फेंकना आसान होता है। हम आमतौर पर अपने आस-पास की भूमि या क्षेत्र में जब तक साफ-सफाई नहीं करेंगे या अपशिष्ट पदार्थों को उनके निश्चित स्थान पर नहीं डालेंगे तो धीरे-धीरे बदबू और गंदगी बढ़ेगी और हमारे आसपास का वातावरण सीधे तौर पर प्रभावित होगा। ई.पी.ए. के आंकड़ों के अनुसार औसत व्यक्ति प्रति दिन 5.0 पाउंड कचरा उत्पन्न करता है। यह अंततः भूमि पर या पर्यावरणीय आवासों और महासागरों में पहुंच जाता है।

अपशिष्ट निपटान न केवल पृथ्वी और उसके पर्यावरण के लिए बल्कि मनुष्यों के लिए भी खतरा है। समुद्र या महासागरों में अपशिष्ट पदार्थ या कचरा समुद्री जीवो के लिए खतरनाक है। जब कचरे को जलाने या परमाणु के माध्यम से निपटाया जाता है, तो यह हवा में खतरनाक विषाक्त पदार्थों का उत्सर्जन करता है, और हवा में जहरीली गैस की मात्रा बढ़ जाती है जिससे मनुष्य को सांस लेने में समस्या होती है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार यह पर्यावरण के ऐसे मुद्दे हैं जो भविष्य में एक बड़ी समस्या का रूप ले सकता है।

जनसंख्या

जनसंख्या की बात करें तो जनसंख्या के मामले में हम विश्व में पहले स्थान पर आ चुके हैं। जनसंख्या बढ़ने के कारण वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड व अन्य गैसों की मात्रा भी बढ़ रही है। पृथ्वी पर बढ़ती आबादी, ग्रीनहाउस गैसों और जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण व वातावरण पर उनका सीधा प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या या आबादी बढ़ने के कारण प्राकृतिक संसाधनों में भी कमी होती जा रही है। संसाधन हमेशा स्थायी रूप से उपलब्ध नहीं होते हैं, लेकिन उन संसाधनों के बिना, जनसंख्या जीवित नहीं रहेगी। उम्मीद है, हमें इसका एहसास बहुत देर से नहीं होगा। अक्षय ऊर्जा स्रोत कार्बन उत्सर्जन से निपटने का एक शानदार तरीका है। पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा जैसी स्थायी ऊर्जा की मात्रा बढ़ाकर, कार्बन उत्सर्जन को कम करते हुए, आवश्यक संसाधनों को स्थायी रूप से प्राप्त किया जा सकता है। हम जनसंख्या वृद्धि पर निर्णय नहीं ले पा रहे हैं परंतु जनसंख्या पर्यावरण मे क्या योगदान दे रही हैं इस महत्वपूर्ण बिंदु पर हमें ध्यान देना होगा।

जैव विविधता की हानि

भारत में पर्यावरण संबंधी मुद्दों की सूची में जैव विविधता की हानि कम महत्वपूर्ण नहीं है। भारत में चार प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट हैं, ऐसे क्षेत्र जिनमें जानवरों और पौधों की प्रजातियों का महत्वपूर्ण स्तर है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट द्वारा जारी 2021 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत पहले ही चार हॉटस्पॉट के तहत लगभग 82% क्षेत्र खो चुका है।जैव विविधता का स्तर काफी कम हो गया है। विश्व वन्यजीव संघ के अनुसार, पिछले तीन दशकों में जैव विविधता में 28.6 प्रतिशत की गिरावट आई है। शहरीकरण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन सहित विभिन्न खतरों के कारण जैव विविधता गंभीर स्थिति में है। जैव विविधता की कमी खाद्य श्रृंखला, जल स्रोतों और अन्य संसाधनों को खतरे में डालती है। पर्याप्त जैव विविधता के बिना, पारिस्थितिक तंत्र तब तक बिगड़ते हैं जब तक उनका अस्तित्व नहीं रह जाता। दुनिया सिर्फ जैव विविधता के नुकसान की लागत वहन नहीं कर सकती है। शिक्षा और संरक्षण जैव विविधता की हानि से निपटने की कुंजी हैं। हमें राष्ट्रीय स्तर,विश्वविद्यालय,तथा कॉलेज स्तर पर चिंतन करना होगा और जागरूकता कार्यक्रमों के द्वारा इस समस्या का समाधान करना होगा। जिससे हम विशेष पारिस्थितिक तंत्र को सुरक्षित रख सके और बेहतरीन पर्यावरण व वातावरण का निर्माण कर सके।

जल की कमी और जल प्रदूषण

पृथ्वी पर करीब 97.4 प्रतिशत पानी खारा हो चुका है। इस आधार से पृथ्वी पर केवल 2.6 प्रतिशत पीने योग्य पानी बचा हुआ है। भारत में उपलब्ध जल मात्रा का केवल 11 प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है।अर्थव्यवस्था और शहरीकरण वाले समाज की मांग ऐसे समय में आ रही है जब आपूर्ति बढ़ाने की संभावना सीमित है, जल स्तर गिर रहा है और जल गुणवत्ता के मुद्दे तेजी से सामने आ रहे हैं। वर्तमान स्वरूप जारी रहा तो 2035 तक पानी की लगभग आधी मांग पूरी नहीं हो पाएगी।

पीने योग्य पानी वायुजनित रोगों, विषाक्त पदार्थों और खतरनाक रसायनों जैसी चीजों से दूषित हो सकता है। अनुमानित 790 मिलियन लोगों के पास स्वच्छ पानी बिल्कुल भी नहीं है। यह केवल अविकसित देशों की समस्या नहीं है। कैलिफ़ोर्निया में 2017 का सूखा, और यह तथ्य कि फ्लिंट, मिशिगन में लगभग चार वर्षों में साफ पानी नहीं था, हमें यह दिखाने के लिए एक आदर्श उदाहरण के रूप में कार्य करना होगा कि पानी की कमी और प्रदूषण हर जगह सिर्फ एक समस्या नहीं है, सभी स्तर पर बहुत बड़ी समस्या है पृथ्वी की तरह, हमारा शरीर भी बहुत सारे पानी से बना है। जीवित रहने के लिए भूमि और हमारे शरीर दोनों को स्वच्छ जल की आवश्यकता होती है। अतः इस समस्या के लिए हमें जागरूक होना होगा।

वायु प्रदूषण

प्रदूषण कई रूपों में आता है। वायु, मिट्टी और पानी सभी में प्रदूषित होने की क्षमता है। प्रदूषण लोगों और पर्यावरण के लिए वर्तमान और भविष्य के लिए बहुत बड़ा खतरा है। दूषित पानी पीने योग्य नहीं हैं। प्रदूषित वायु ओजोन परत को कमजोर करती है और स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनती है। वायु प्रदूषण का मुख्य कारण कारखाने, मोटर वाहनों और जीवाश्म ईंधन का जलना है। ये कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसे हानिकारक पदार्थों को हवा में छोड़ती हैं।प्रदूषण जानवरों और पर्यावरण को गंभीर स्थिति में डाल देता है। वायु प्रदूषण का मतलब हवा में होने वाले किसी भी भौतिक, रासायनिक या जैविक परिवर्तन से है। यह हानिकारक गैसों, धूल और धुएं द्वारा हवा का प्रदूषण है जो पौधों, जानवरों और मनुष्यों को बुरी तरह प्रभावित करता है। WHO के आंकड़ों से पता चलता है कि दुनिया की लगभग आबादी (97%) ऐसी हवा में सांस लेती है जो WHO के दिशा-निर्देशों की सीमा से ज़्यादा हैं। अतः इस विषय पर हमें गंभीर चिंतन करने की आवश्यकता है। वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों को कम करने का सबसे अच्छा तरीका वृक्षारोपण है। पौधे और पेड़ हवा में बड़ी संख्या में प्रदूषकों को कम करते हैं।

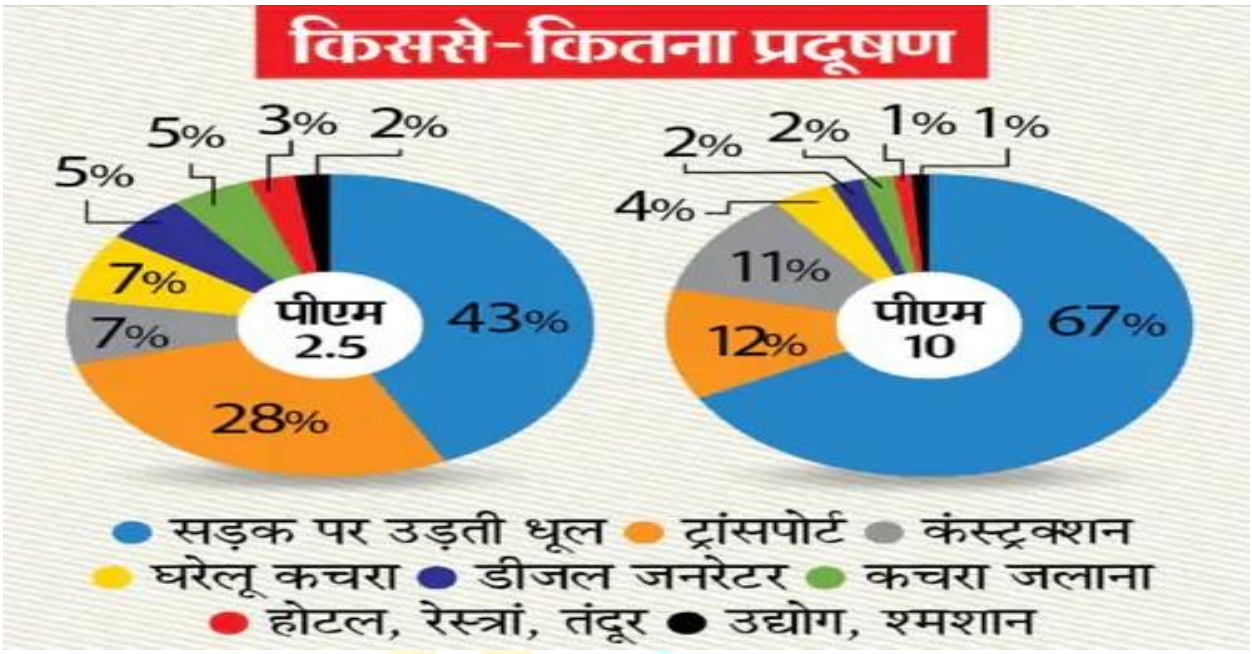

सौर, पवन और भूतापीय ऊर्जा के उपयोग से वायु प्रदूषण में बड़े स्तर पर कमी आती है। भारत सहित विभिन्न देशों ने स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में एक कदम के रूप में इन संसाधनों के उपयोग को लागू किया है।

प्लास्टिक प्रदूषण

विभिन्न रसायन प्लास्टिक की पानी की बोतलों और त्वचा संबंधी उत्पादों से निकलकर हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। ये इंसुलिन प्रतिरोध, प्रजनन स्वास्थ्य में कमी और कैंसर जैसे गंभीर स्वास्थ्य मुद्दों से जुड़े हैं।एकल-उपयोग प्लास्टिक, या डिस्पोजेबल प्लास्टिक, को फेंकने या पुनर्चक्रण करने से पहले केवल एक बार उपयोग किया जाता है। ये वस्तुएं प्लास्टिक बैग और पानी की बोतलें और अधिकांश खाद्य पैकेजिंग जैसी चीजें हैं। प्लास्टिक का मलबा कई तरह से रासायनिक प्रदूषण का प्रतिनिधित्व करता है। इनमें ऐसे रसायन होते हैं जो खाने के दौरान जीवों में शरीर में जमा हो सकते हैं। इसके अलावा, प्लास्टिक की थैलियां कृषि क्षेत्रों में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में बाधा डालकर फसलों की वृद्धि को भी प्रभावित करती हैं।प्लास्टिक से निकलने वाले जहरीले रसायनों के संपर्क में आने से कैंसर, जन्म दोष, कमजोर प्रतिरक्षा और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। जो पर्यावरण व वातावरण के लिए खतरनाक है।

वनों की कटाई

वनों की कटाई एक बड़ी समस्या है। 2031 तक, हमारे पास वर्षा वनों का केवल 10 प्रतिशत ही शेष रह जाएगा, बाकी को लकड़ी या लकड़ी के उत्पादों के लिए काट दिया गया है, या कृषि उपयोग के लिए साफ कर दिया गया है। इसके अलावा, ग्रह की 71 प्रतिशत से अधिक पौधों और जानवरों की प्रजातियां जंगलों में रहती हैं। प्रजातियां अपना आवास खो देती हैं। पारिस्थितिक तंत्र नष्ट हो जाते हैं। जलवायु परिवर्तन जारी है। ऑक्सीजन का उत्पादन करने और कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने के लिए पेड़ कम हैं। यह सब वनों की कटाई के कारण है। लकड़ी और जमीन प्रमुख कारण हैं कि लोग जंगलों को काटते हैं, लेकिन कोई भी विचार पर्याप्त नहीं है अगर इसका मतलब है कि किसी दिन कोई जंगल नहीं बचेगा। वनों की कटाई के कई दुष्प्रभाव हैं जिनके बारे में लोगों को पता नहीं है। इन मुद्दों और चुनौतियों पर हमें जागरुक होने की आवश्यकता है।

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान या स्वच्छ भारत मिशन 2014 से 2019 की अवधि के लिए भारत में एक राष्ट्रव्यापी अभियान रहा है। जिसका उद्देश्य भारत के शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों, और बुनियादी ढांचे को साफ करना और स्वच्छता के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए, भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया है। भारत को स्वच्छ भारत अभियान जैसे स्वच्छता अभियान की सख्त जरूरत है। स्वास्थ्य और कल्याण के मामले में नागरिकों के समग्र विकास के लिए यह महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में कहें तो स्वच्छ भारत अभियान से कचरे के उचित प्रबंधन में भी मदद मिलेगी। यह अपने उद्देश्यों के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ाता है। स्वच्छ भारत अभियान भारत को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने की एक शानदार शुरुआत है। जिससे भारत में एक खुशहाल और स्वच्छ वातावरण तैयार होगा।हम सभी को अपने दायित्व को समझते हुए पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में अपना योगदान देना चाहिए।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी)

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल एक्ट,भारत की संसद का एक अधिनियम है जो पर्यावरणीय मुद्दों से संबंधित मामलों के त्वरित निपटान को संभालने के लिए एक विशेष ट्रिब्यूनल के निर्माण को सक्षम बनाता है। यह भारत के अनुच्छेद 21 के संवैधानिक प्रावधान से प्रेरणा लेता है, जो भारत के नागरिकों को स्वस्थ वातावरण का अधिकार देता है। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) का गठन एनजीटी अधिनियम, 2010 के तहत पर्यावरण संरक्षण, वनों और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण के पीड़ितों को मुआवजा देने और पर्यावरण की बहाली से संबंधित मामलों के प्रभावी और त्वरित निपटान के लिए किया गया है। यह पर्यावरण मानदंडों के उल्लंघन के खिलाफ मूल आवेदनोंऔर जल, वायु, ईपी और जैव-विविधता अधिनियमों के तहत प्राधिकरणों के निर्णयों के खिलाफ अपीलों को क्रमशः अधिनियम की धारा 15 और 16 के तहत निपटाता है।पिछले पांच सालों में न्यायाधिकरण को 15132 नए मामले मिले और 16042 मामलों का निपटारा किया गया।माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेशों के तहत कुछ अन्य मामलों की निगरानी भी न्यायाधिकरण कर रहा है। जैसे यमुना और गंगा के पुनरुद्धार, खतरनाक अपशिष्ट स्थलों की बहाली ,पारिस्थितिकी के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा, पहाड़ियाँ, जंगल, वन्यजीव आवास, तटीय क्षेत्र, वन्यजीव संरक्षण, थर्मल पावर

प्लांट द्वारा वैधानिक मानदंडों का उल्लंघन, औद्योगिक प्रदूषण, भूजल निष्कर्षण, वर्षा जल संचयन, उपचारित जल का पुनः उपयोग, ध्वनि प्रदूषण, वन और अवैध वृक्ष कटाई, जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन, इलेक्ट्रॉनिक और खतरनाक अपशिष्ट, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, जैव विविधता प्रबंधन समितियों (बीएमसी) की स्थापना, और संस्थागत सुदृढ़ीकरण शामिल हैं। न्यायाधिकरण ने सभी जिलों के लिए जिला पर्यावरण योजना तैयार करने और क्रियान्वयन की प्रगति को वेबसाइटों पर डालने, नदियों के कायाकल्प के लिए कार्ययोजना, वायु गुणवत्ता बहाल करने, बार-बार उल्लंघन किए जाने वाले मानदंडों के अनुपालन की निगरानी करने और प्रगति को संबंधित वेबसाइटों पर डालने का निर्देश दिया।

निष्कर्ष

हमारी गतिविधियां ही पर्यावरण में हानिकारक गैसों और प्रदूषकों के स्तर में वृद्धि का प्रमुख कारण हैं। पर्यावरण संबंधी समस्या की गंभीरता को समझते हुए हम सभी को जागरूक होना होगा। पर्यावरण संरक्षण से वायु, जल और भूमि प्रदूषण कम करने के प्रयास करने होंगे। जैव विविधता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण संरक्षण का बहुत महत्व है। सभी के सतत विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण महत्वपूर्ण है। हमारा पर्यावरण केवल पेड़ों, नदियों और जानवरों का संग्रह नहीं है; यह हमारे अस्तित्व की नींव है। सभी जीवित चीजों के परस्पर संबंध को समझना और पृथ्वी के संरक्षक के रूप में हमारी जिम्मेदारी को पहचानना आवश्यक है। **पर्यावरण की रक्षा करने का एक तरीका है रीसाइकिलिंग - कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने का एक तरीका। दूसरा तरीका है अपने जीवन में पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का उपयोग करना।** हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने, पानी की खपत कम करने और पर्यावरण संरक्षण प्रथाओं का समर्थन करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करना चाहिए। हम भूमि की गुणवत्ता को अच्छा व बढ़ाकर, अपने पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुंदर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। पर्यावरण मामलों में ट्रिब्यूनल और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड दारा सही से निगरानी और दोषियों पर उचित कार्रवाई की जानी चाहिए।

संदर्भ

1. जलवायु परिवर्तन - मानवीय प्रभाव। मूल से 2016-04-04 को संग्रहीत। 29 जून 2017 को लिया गया।
2. जलवायु परिवर्तन - खतरे और समाधान। मूल से 2016-04-07 को संग्रहीत। 29 जून 2017 को लिया गया।
3. लिविंग ब्लू प्लैनेट रिपोर्ट (पीडीएफ)। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ. 2015. आईएसबीएन 978-2-940529-24-7।
4. उदय मोहन बाबू, आर., और कलैयारासन, जी. (2019)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में दीर्घकालिक स्मृति के लिए दृश्य-स्थानिक कौशल का प्रभाव।
5. उदय मोहन बाबू, आर., और कलैयारासन, जी. (2017)। माई सिटी क्लीन सिटी-क्लीन इंडिया एंड ग्रीन इंडिया

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation